Q. बाजार से आप क्या समझते हैं? विस्तृत बाजार के शर्तें-प्रथम वर्ष लिए आवश्यक शर्तें क्या हैं! → For 2020 Exam

11.9.20

Ans. अर्थशास्त्र में बाजार (Market) शब्द का बड़ा ही व्यापक महत्व है। Cournot के अनुसार - "अर्थशास्त्री बाजार शब्द से उस समस्त क्षेत्र का बोध करते हैं, जिसमें क्रेताओं एवं विक्रेताओं में इस प्रकार का प्रतियोगितापूर्ण एवं स्वतंत्र सम्बन्ध हो कि उस क्षेत्र में किसी वस्तु के मूल्य में एक समान होने की प्रवृत्ति पायी जाती है।" इस प्रकार अर्थशास्त्र में बाजार शब्द का प्रयोग किसी स्थान विशेष के लिए जहाँ क्रेता विक्रेता खरीद-बिक्री कार्य के लिए एकत्र होते हैं, नहीं किया जाता, वरन् बाजार शब्द से किसी वस्तु के क्रेताओं एवं विक्रेताओं के उस समूह का बोध होता है, जिसमें आपस में स्वतंत्र एवं प्रतियोगितापूर्ण सम्बन्ध हो।

इसी प्रकार Benham के अनुसार - "बाजार वह क्षेत्र है जहाँ क्रेता एवं विक्रेताओं में प्रत्यक्ष अथवा व्यापारियों के द्वारा इस प्रकार का सम्बन्ध हो कि बाजार के एक भाग में प्रचलित मूल्यों का बाजार के दूसरे भाग के मूल्यों पर प्रभाव पड़ता हो।" इसी प्रकार चैपमैन ने निम्न शब्दों में बाजार को स्पष्ट किया है कि इनके अनुसार बाजार शब्द का आशय किसी स्थान विशेष से नहीं, वरन् उस वस्तु अथवा वस्तुओं एवं उनके क्रेताओं तथा विक्रेताओं से संबंधित होता है जो आपस में प्रत्यक्ष रूप से प्रतियोगिता करते हैं।" प्रो. Cairncross के अनुसार - "अर्थशास्त्र में किसी बाजार का तात्पर्य क्रेता तथा विक्रेताओं के बीच किसी साधन अथवा वस्तु के लेन देन के जाल सूत्र से है।" ("The market in Economics is simply the net-work of dealing in any factor or product between buyers and sellers.") उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र में बाजार से किसी स्थान रूप या क्षेत्र विशेष का बोध नहीं होता है। P.T.O →

इसका तात्पर्य यह है कि क्रेता एवं विक्रेताओं के बीच आपस में प्रतियोगिता पूर्ण संबंध रहना है, जिसके फलस्वरूप एक समय में किसी एक वस्तु का मूल्य सर्वत्र एक समान होती है। जैसे - सोने के बाजार, गेहूँ का बाजार इत्यादि।

विस्तृत बाजार के लिए आवश्यक शर्तें : → वास्तव में किसी वस्तु का बाजार बड़ा होता है या छोटा भी होता है जिसका कारण है कि कुछ वस्तु के खरीदने एवं बेचनेवाले बहुत बड़े क्षेत्र में बिखरे हुए हैं, और कुछ वस्तु के क्रेता एवं विक्रेता सीमित क्षेत्र में ही पाये जाते हैं। बाजार की विस्तार प्रधानतया दो बातों पर निर्भर करती है :- (1) वस्तु का गुण (2) देश की आन्तरिक स्थिति। (1) विस्तृत बाजार के लिए वस्तुओं में निम्न गुण होना चाहिए। — (i) वस्तु की विस्तृत/व्यापक मांग होनी चाहिए (ii) वस्तु में टिकाऊपन होना चाहिए। (iii) वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने की सुविधा हो। (iv) वस्तु के पूर्ति का पर्याप्त होना चाहिए (v) वस्तुओं के मूल्य में स्थिरता रहनी चाहिए। जिस वस्तु के मूल्य में परिवर्तनशीलता रहती है उस वस्तु का बाजार विस्तृत नहीं होता है। (2) देश की आन्तरिक स्थिति → बाजार का विस्तार देश की आन्तरिक दशाओं पर भी निर्भर करता है। (i) बाजार का विस्तार यातायात तथा संवादवाहन के साधनों का विकास पर निर्भर करता है। (ii) बाजार के विस्तार के लिए देश में शांति एवं सुरक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। (iii) बाजार का विस्तार, देश के बैंकिंग एवं साख के साधनों के विकास पर निर्भर करता है। (iv) वस्तु के बाजार के विस्तार में विक्रयकला, विज्ञापन, प्रदर्शनी तथा व्यापार के आधुनिक तरीकों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। (v) बाजार के विस्तार पर सरकारी नीति का भी प्रभाव पड़ता है। (vi) इसके अतिरिक्त, वस्तु के बाजार पर करों की प्रकृति एवं [illegible] मात्रा का भी प्रभाव पड़ता है। वस्तुतः उपर्युक्त सारी बातों पर ही बाजार का विस्तार निर्भर है। किन्तु वर्तमान युग में रेल, टेलीफोन, तार आदि की व्यवस्था के कारण अधिकांश वस्तुओं के बाजार की प्रकृति विस्तृत होने की होती है।

R.N.S. College Sukhdona. Prof. Brajesh Pathak 21.9.2[illegible]

भारत के विदेशी व्यापार की मात्रा
(Volume of India's Foreign trade)

शास्त्री - II Adyr 21/9/20

Date

स्वतंत्रता के उपरान्त भारत के विदेशी व्यापार में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है, यह वृद्धि व्यापार की मात्रा एवं मूल्य दोनों में हुई है।

विगत दस वर्षों से भारतीय व्यापारिक माल व्यापार (प्रीमियम शुल्क आधार पर) 2004-05 में 195.1 मिलियन अमरीकी डालर से 2018-19 में बढ़कर 844.157 बिलियन अमरीकी डालर हो गया अर्थात 4 गुणा बढ़ गया। विश्व व्यापार संगठन के अनुसार वैश्विक निर्यात और आयात में भारत का हिस्सा वर्ष 2004 में क्रमशः 0.8 प्रतिशत और 1.0 प्रतिशत से 2018 में बढ़कर क्रमशः 1.67 प्रतिशत और 2.57 प्रतिशत हो गया है। अग्रणी निर्यातकों और आयातकों की दृष्टि से भारत का स्थान वर्ष 2004 में क्रमशः 30 और 23 से सुधरकर 2018 में क्रमशः 19 और 10 हो गया। जहाँ सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी GDP) के अनुपात के रूप में कुल भारतीय व्यापारिक माल व्यापार 2004-05 में 29.0 प्रतिशत से बढ़कर 2013-14 में 41 प्रतिशत हो गया है। यद्यपि यह 2014-15 में गिरकर 35.1 प्रतिशत रह गया। 2015-16 में यह और गिरकर 26.9 प्रतिशत 2018-19 में 31% प्रतिशत रह गया।

वर्ष 2018-19 में देश के निर्यात 330.078 बिलियन डालर के रहे। जो वर्ष 2017-18 की इसी अवधि की तुलना में 8.7% की वृद्धि दर्शाते हैं। वर्ष 2018-19 में देश के आयात 514.078 बिलियन डालर के रहे। जो वर्ष 2017-18 की तुलना में 10.4% की वृद्धि दर्शाते हैं। इस प्रकार वर्ष 2018-19 में भारत का व्यापार घाटा 184 अरब डालर के आसपास रहा जबकि वर्ष 2017-18 में यह घाटा मात्र 162.05 बिलियन डालर रिकार्ड किया गया था। भारत से April, March 2019-20 में 528.45 अरब अमेरिकी डालर का समग्र निर्यात (Export) (वस्तु एवं सेवाएँ) होने का अनुमान लगाया गया है।

R.K.S. College Sukhsena Purnea

4.9.20

(1)

अर्थशास्त्री-IInd

B. Pathak
Asso Prof.
Economics-

[illegible]
Apshabdmi [illegible]
For 2020 Final exam
[illegible]

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्व :→

भारत कृषि प्रधान देश है। इसलिए यहाँ कि अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है। देश की कुल जनसंख्या के करीब 70% प्रतिशत लोगों का जीविका का साधन कृषि ही है। भारत के राष्ट्रीय आय में कृषि का 27% प्रतिशत योगदान है। भारतीय अर्थव्यवस्था में निम्नलिखित कारणों से कृषि का अत्यन्त ही महत्व है :—

(1) यह जीवन निर्वाह का मुख्य साधन है :— वास्तव में भारत में अधिकांश लोगों के जीवन निर्वाह का प्रमुख साधन कृषि ही है। 1981 के जनगणना के अनुसार जनसंख्या के 42% व्यक्ति किसान एवं 26 प्रतिशत व्यक्ति खेतिहर मजदूर थे। इस प्रकार भारत में कृषि जीवन निर्वाह का प्रमुख साधन है।

(2) खाद्यान्न की आपूर्ति का मुख्य साधन :- भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की आपूर्ति कृषि से ही होती है। कभी कभी भारत को विदेशों से भी खाद्यान्न का आयात करना पड़ता है। जनसंख्या के वृद्धि दर के अनुरूप खाद्यान्न की उत्पादन जिस साल देश में कम होती है उस साल भारत को विदेशों से अनाज आयात करना पड़ता है।

(3) राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत :- भारत की राष्ट्रीय आय का अधिकांश भाग कृषि से ही प्राप्त होता है। इधर कुछ दिनों से राष्ट्रीय आय से कृषि से प्राप्त आय के प्रतिशत में कमी आई है, जो हमारे औद्योगिक प्रगति का सूचक है।

(4) भारतीय कृषि देश के औद्योगिक विकास में भी निम्न प्रकार से योगदान देती है जैसे कच्चे माल की पूर्ति, शहरी जनता के लिए भोजन का साधन, पूँजी का साधन, इत्यादि।

P. T. O. →